"खड़ी बोली"

काल के प्रवाह में पर्याप्त परिवर्तन होते रहते हैं। जिस हिन्दी क्षेत्र में पल्ल वर्ष तक अवधी और ब्रज का एकछत्र राज्य रहा, उसी हिन्दी भाषा क्षेत्र में एकाएक 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में एक नई दस्तक सुनाई दी साहित्य के क्षेत्र में एवं राजभाषा के रूप में एक नई बोली प्रतिष्ठित होने लगी। इस नई बोली के लिए 'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग लल्लुलाल और सदल मिश्र द्वारा 1860 में किया गया था। इस बोली के अनेक नाम हैं, जैसे हिन्दुस्तानी, नागरी, सरहिन्दी, कौरवी आदि। कुरुजनपद की बोली होने के कारण राहुल सांकृत्यायन ने इस भाषा को नया नाम कौरवी देने का प्रयास किया है। खड़ीबोली के साहित्यिक स्वरूप की चर्चा करने की अपेक्षा इसके नाम पर विचार करना अपेक्षित है।

खड़ी बोली: अर्थ और उद्भावना — खड़ी बोली शब्द के अर्थ और इसकी उद्भावना के विषय में पर्याप्त मतभेद है। इन मतभेदों को एक साथ समाहित करते हुए डॉ० भोलानाथ तिवारी ने प्रचलित आठ मतों का उल्लेख किया है —

(i) खरी या विशुद्ध — इसके खड़ी शब्द को "खरी (शुद्ध) भाषा के रूप में स्वीकृति देने वाले इसे अरबी-फारसी शब्दों से मुक्त शुद्ध भारतीय भाषा मानते हैं। इस सन्दर्भ में गिलक्राइस्ट द्वारा लल्लुलाल एवं सदल मिश्र को खड़ी (खरी/शुद्ध) बोली में अपनी रचना करने का निर्देश देते हैं।

(ii) खड़ी अर्थात जो पड़ी न हो अर्थात उठी हुई है — चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने लिखा है, "पुरानी कविता जो मिलती है वह ब्रजभाषा, अवधी, राजस्थानी और गुजराती आदि में मिलती है, ... पड़ी बोली पाई जाती है।" मेरठ की पड़ी बोली को खड़ी बनाकर लश्कर और समाज के लिए उपयोगी बनाया। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या भी इस मत के समर्थक हैं।

(iii) खड़ी और खरी — श्री ब्रजरत्नदास ने रेख्ता (गिरी-पड़ी) की तुलना में इसे खड़ी या खरी माना है। लल्लुलाल ने रेख्ता में से उर्दू शब्दों को निकालकर इसमें तत्सम शब्दों को रखकर अपनी रचना लिखी।

IV खड़ी या कर्कश — श्री कामताप्रसाद गुरु ने ब्रज, अवधी की मिठास

रेख्ता = हिन्दवी और फारसी का मिश्रण

तुलना में इसे तर्कसंगत मानते हुए इसे खड़ी सज्ञा देना अधिक उचित समझा है।

V खड़ी पाई वाली — किशोरीदास वाजपेयी ने ब्रजभाषा की औकारान्तता एवं अवधी की व्यंजनान्तता की तुलना में इसकी अकारान्तता को ध्यान में रखकर खड़ी पाई के बहुल प्रयोग के आधार पर इसे 'खड़ीबोली' नाम देना सार्थक माना

VI गँवारू बोली — अब्दुल हक नामक व्यक्ति ने इसे देहात ग्रामीण बोली मानकर इसे गँवारू बोली माना है।

VII प्रचलित या चलती भाषा — टी. ग्राहम बैली ने इसे खड़ी, अवस्थित, प्रचलित या स्थापित भाषा कहकर पुकारा है।

VIII टकसाली या स्टैण्डर्ड — कुछ लोग स्टैण्डर्ड शब्द के मूल में स्टैण्ड (खड़ा होना) के आधार पर इसे खड़ी बोली के नाम का मूल तत्व मानते हैं।

इन सभी मतों की समीक्षा करने पर प्रथम तीन-चार मत ही उपयुक्त लगते हैं तथा यह स्पष्ट बोध होता है कि इसका खरापन, विशुद्धता एवं देशव्यापी प्रयोग अन्य सभी बोलियों की तुलना में इसे अवधी शताब्दी में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में सहायक हुए।

ऐतिहासिक दृष्टि से खड़ी बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। यह बोली सहेलखंड, उत्तरी दोआब तथा अम्बाला जिले की बोली है। दिल्ली के उत्तरपूर्व को लेकर हिमालय की तराई तक फैले भू-भाग में यह बोली जाती है। इसके अन्तर्गत रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, अम्बाला, जगाधरी क्षेत्र आते हैं। इस समय इसके बोलने वालों की संख्या एक करोड़ से अधिक है।

खड़ी बोली में साहित्य की दो शैलियाँ हैं, पहली उर्दू प्रभावित, दूसरी तत्सम शब्दावली बहुल परिनिष्ठित शैली। आज की राजभाषा, राष्ट्रभाषा में भी इसी रूप को अपनाया गया है। वर्तमान समय में हिन्दी की साहित्यिक रचना इसी में होती है। खड़ी बोली की विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

(1) सामान्यतः खड़ी बोली में तीर्यक स्वरों के उपरान्त आने वाले व्यंजन द्वित्व हो जाते हैं। जैसे मोटा का मोट्टा, राजा का राज्जा और गाड़ी का गाड्डी।

Scanned by CamScanner

स्वरलोप की प्रवृति भी मिलती है। जैसे 'अंगूठा' का 'गूठा', 'असाढ़' का 'साढ़'

दो महाप्राण ध्वनियाँ एक साथ उच्चरित नहीं होती। जैसे घूंघट का घूंगट, धुंध का धुंद।

4 खड़ी बोली आकारान्त होती है। जैसे - पाया, गया, लिखा।

5 न एवं ल का मूर्धन्यीकरण। शब्द का अन्तिम 'न' 'ण' में परिवर्तित हो जाता है। यथा - देना - देणा, भगवान - भगवाण।

6 कहीं-कहीं मध्य में आई महाप्राण ध्वनि 'ह' उच्चारण में लुप्त हो जाती है। जैसे कहानी का कानी, साहब का साब, दुलहिन का दुलिन

7 पद बनाने के लिए कारक और प्रत्ययों का प्रयोग होता है। जैसे, ने का कर्ता कारक में प्रयोग होता है।

8 यह अपेक्षाकृत कठोर बोली है। इसलिए इसमें उच्चारण में टवर्ग का, व्यंजन द्वित्व का, मूर्धन्यीकरण की प्रवृति अत्यधिक है।

9 खड़ी बोली हिन्दी अर्द्धस्वरमूला बोली है, क्योंकि इसमे यह को ये, वह को वो बोला जाता है।

10 वर्तमान तथा भविष्यकालिक क्रियाओं के दीर्घ स्वरांत क्रियापद संक्षिप्त हो जाता है। जैसे — जाता है - जावै, जाऊँ, जाऊँगा का जांगा।

11 भूतकालिक कृदन्तों में 'आ' विभक्ति का योग होता है। 'आ' प्रत्यय के पूर्व कहीं-कहीं 'य' श्रुति मिलती है। यथा - भेजा - भेज्या, लिखा का लिख्या, चला का चल्या।

12 खड़ी बोली में दो लिंग, दो वचन माने जाते हैं।

वचन - एकवचन, बहुवचन

लिंग - स्त्रीलिंग, पुल्लिंग

13 खड़ी बोली में अरबी, फारसी, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के साथ-साथ तद्भव और देशज शब्दावली का बहुल प्रयोग किया है।

खड़ी बोली का प्रचार -

1829 - बंगदूत नामक पत्र - राजा राममोहन राय

ओइम् जय जगदीश हरे - श्रद्धा राम फिल्लौरी

1) सत्यार्थ प्रकाश - स्वामी दयानंद

रानी केतकी की कहानी - इंशा अल्लाह खां